International Journal of
LAW, ARTS AND HUMANITIES
Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal
www.zesterapublications.com
ISSN: 3070-0523
Original Research Paper

# भारत के चीन और अमेरिका के साथ ऐतिहासिक संबंध: एक विश्लेषण (1945-2003)

**सुनील वर्मा**

सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान

राजकीय महाविद्यालय केकड़ी

**प्रस्तावना:** यह अध्ययन भारत के चीन और अमेरिका के साथ संबंधों के ऐतिहासिक विश्लेषण (1945 से 2003 तक) पर केंद्रित है । इसमें भारत की विदेश नीति और दोनों देशों के साथ रिश्तों की मुख्य पहलुओं का मूल्यांकन किया है। इस अध्ययन से हमें 1945 से 2003 तक भारत के बाह्य नीति में चीन और अमेरिका के साथ संबंधों के परिणाम समझने में मदद मिलेगी। साथ ही, हमें अमेरिका और चीन के साथ भारत के राजनयिक संबंधों की वर्तमान स्थिति पर ऐतिहासिक नीतियों और घटनाओं के प्रभाव को समझने में भी मदद मिलेगी।

**शब्दसंकेत:** भू राजनीति, गुटनिरपेक्षता, विश्व व्यवस्था, रचनात्मक सहयोग, राजनयिक सम्बन्ध, अलगाव।

**परिचय: -**

1945 से 2003 तक भारत के चीन और संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ संबंधों को सहयोग, प्रतिस्पर्धा और भू-राजनीतिक तनाव की एक जटिल परस्पर क्रिया द्वारा चिह्नित किया गया हैं। द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद, भारत एक नए स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में उभरा, जो गुटनिरपेक्षता की वकालत कर रहा था और शांति, संप्रभुता और विकास के सिद्धांतों पर आधारित विदेश नीति अपना रहा था। इस बीच, 1949 में पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना की स्थापना और उसके बाद विभिन्न नेतृत्व के तहत अपनी विदेश नीति में बदलाव के साथ, चीन में

Received: 21-03-2026 | Accepted: 27-04-2026 | Published: 04-05-2026

International Journal of
LAW, ARTS AND HUMANITIES
Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal
ISSN: 3070-0523 www.zesterapublications.com Original Research Paper

क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। एक वैश्विक महाशक्ति के रूप में, संयुक्त राज्य अमेरिका ने, विशेष रूप से शीत युद्ध के संदर्भ में, रोकथाम और गठबंधन-निर्माण की अपनी नीतियों के माध्यम से युद्ध के बाद की विश्व व्यवस्था को आकार देने की कोशिश की। इस पूरी अवधि के दौरान, आपसी संबंधों को कई महत्वपूर्ण घटनाओं द्वारा आकर दिया गया, जिनमें 1962 का भारत-चीन सीमा संघर्ष, 1974 और 1998 में भारत के परमाणु परीक्षण और 1970 के दशक में चीन-अमेरिकी संबंधों का सामान्यीकरण शामिल था। इन घटनाओं ने इन तीन प्रमुख शक्तियों के बीच उभरती गतिशीलता के लिए मंच तैयार किया और आने वाले वर्षों में उनकी नीतियों के लिए आधार तैयार किया।

**भारत - चीन के बीच सम्बन्ध: -**

भारत और चीन के संबंधों में पिछले पचास वर्षों में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। प्रारंभ में, 1950 के दशक में एक मैत्रीपूर्ण और सकारात्मक माहौल था, उसके बाद 1960 और 1970 के दशक में तीव्र शत्रुता थी। 1980 के दशक में, सुलह का दौर था और सोवियत संघ के पतन के बाद से, पुनः समायोजन की प्रक्रिया चल रही है। शीत युद्ध के बाद के युग ने नई दिल्ली और बीजिंग के लिए पारस्परिक रूप से लाभकारी संबंध स्थापित करने का महत्वपूर्ण अवसर प्रस्तुत किया है। दोनों देशों ने एशिया में शांति और स्थिरता के स्थायी लाभ के साथ-साथ घरेलू स्तर पर त्वरित आर्थिक विकास और समृद्धि के लिए कई क्षेत्रों में सहयोग की तत्काल आवश्यकता देखी है। नेहरू ने अक्टूबर 1949 में साम्यवादी चीन की स्थापना का उत्साहपूर्वक भव्यता के साथ जश्न मनाया। भारत पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना (पीआरसी) को मान्यता देने वाला पहला गैर-कम्युनिस्ट देश था। भारत ने संयुक्त राष्ट्र में अपनी सदस्यता की वकालत करने में असामान्य उत्साह दिखाया। नेहरू ने अमेरिकी दृष्टिकोण से भिन्न दृष्टिकोण रखा कि साम्यवाद ने वैश्विक शांति और स्थिरता के लिए खतरा पैदा किया है। इसके विपरीत, उनका मानना था कि साम्यवाद

Received: 21-03-2026 | Accepted: 27-04-2026 | Published: 04-05-2026

International Journal of
LAW, ARTS AND HUMANITIES
Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal
ISSN: 3070-0523 www.zesterapublications.com Original Research Paper

के खिलाफ पश्चिमी शत्रुता का उल्टा असर हो सकता है, यह देखते हुए कि चीन में राष्ट्रवाद साम्यवाद से अधिक शक्तिशाली था। भारतीय प्रधान मंत्री का मानना था कि उस समय चीनी राष्ट्रवाद का साम्यवाद से अधिक प्रभाव था। चीन-भारत संबंधों के प्रारंभिक चरण के दौरान, 1950 में चीन द्वारा तिब्बत पर सैन्य कब्ज़ा करने के बावजूद, एक मजबूत और सौहार्दपूर्ण बंधन मौजूद था। बीजिंग के साथ भारत सरकार के औपचारिक विरोध की कमी के कारण, संसद में विपक्षी नेताओं ने तिब्बती मुद्दे के प्रति नेहरू के उदार दृष्टिकोण की निंदा की। अपने पिता के विपरीत, श्रीमती इंदिरा गांधी ने भावनाओं और आदर्शवाद से प्रभावित हुए बिना, भारत की विदेश और रक्षा नीतियों में व्यावहारिकता और यथार्थवाद की भावना को शामिल करने का प्रयास किया। उन्होंने कई संबंधित अधिनियमों को लागू करके भारत के शक्ति प्रक्षेपण कार्यक्रम को सख्ती से लागू किया। 1971 में पाकिस्तान के विघटन में भारत की भागीदारी, मई 1974 में परमाणु परिक्षण, और इसके बाद सिक्किम पर कब्ज़ा, सभी इस धारणा का समर्थन करते हैं। इनसे चीन के साथ भारत के रिश्ते ख़राब हो गए। हालाँकि, श्रीमती गांधी ने बीजिंग के साथ संबंधों को सामान्य बनाने की दिशा में लगातार काम किया, जिससे अंततः 1976 में 14 साल के बाद चीन के साथ राजनयिक संबंधों की पुनः स्थापना हुई। 1977 के संसदीय चुनावों में श्रीमती गांधी की कांग्रेस पार्टी की भारी विफलता के परिणामस्वरूप जनता पार्टी के नेतृत्व वाले प्रशासन की स्थापना हुई, जिसका नेतृत्व महात्मा गांधी के कट्टर अनुशासक और समर्पित अनुयायी मोरारजी देसाई ने किया। प्रधानमंत्री देसाई ने चीन के साथ सामान्य राजनयिक संबंध स्थापित करने की परंपरा को बरकरार रखा। उन्होंने सुलह के रास्ते को आगे बढ़ाने के लिए अपने विदेश मंत्री ए.बी. वाजपेयी को 1979 में चीन का दौरा करने के लिए भेजा। इस यात्रा के दौरान, वाजपेयी ने चीनी नेताओं के सामने विवादास्पद सीमा मुद्दा उठाया।

Received: 21-03-2026 | Accepted: 27-04-2026 | Published: 04-05-2026

International Journal of
LAW, ARTS AND HUMANITIES
Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal
ISSN: 3070-0523 www.zesterapublications.com Original Research Paper

अरुणाचल प्रदेश को 1986 में भारत सरकार द्वारा पूर्ण राज्य का दर्जा प्रदान किया गया था। चीनी सरकार ने भारत के इस दावे पर कड़ी आपत्ति जताई कि अरुणाचल प्रदेश (जिसे पहले नॉर्थ ईस्ट फ्रंटियर एजेंसी कहा जाता था) उसके क्षेत्र का एक अविभाज्य अंग है। दिसंबर 1988 में जब प्रधान मंत्री राजीव गांधी ने बीजिंग की अभूतपूर्व यात्रा की, तो भारत-चीन संबंधों में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन आया। मई 1998 में भारत द्वारा परमाणु परीक्षण करने के बाद चीन-भारत संबंधों के सौहार्दपूर्ण चरण पर घटनाओं के नकारात्मक प्रभाव का साया पड़ गया। चीन की प्रारंभिक प्रतिक्रिया मध्यम थी। 13 मई को न्यूयॉर्क टाइम्स द्वारा अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन और अन्य नेताओं को लिखे गए वाजपेयी के पत्र को प्रकाशित करने के बाद चीन के रुख में एक महत्वपूर्ण बदलाव आया। 11 मई को पहले भारतीय परिक्षण के दौरान दिए गए पत्र में परीक्षणों के लिए स्पष्टीकरण प्रदान किया गया था। चीनी सरकार ने भारतीय आरोप को यह कहते हुए खारिज कर दिया कि यह "पूरी तरह से निराधार" है। राष्ट्रपति जियांग जेमिन ने चिंता व्यक्त की कि इन हथियारों के परीक्षणों से न केवल क्षेत्र में हथियारों की होड़ तेज हो जाएगी, बल्कि नई दिल्ली और इस्लामाबाद के बीच चल रहे तनाव भी बदतर हो जाएंगे। मार्च 2000 में, भारत ने बीजिंग में आयोजित सुरक्षा वार्ता में भाग लिया। जुलाई 2000 में, भारतीय विदेश मंत्री जसवन्त सिंह की चीन यात्रा एक महत्वपूर्ण कूटनीतिक कार्रवाई थी जिसका उद्देश्य नई दिल्ली और बीजिंग के बीच शेष मुद्दों को हल करना था। 14 से 18 जनवरी 2002 तक चीनी प्रधानमंत्री झू रोंगजी की भारत की यात्रा ने भारत और चीन की एशिया-प्रशांत क्षेत्र में शांति, सुरक्षा और स्थिरता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। जून 2003 में प्रधान मंत्री वाजपेयी की चीन यात्रा से दोनों देशों के बीच विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ावा मिला। इस यात्रा के दौरान चीन के साथ नौ समझौते किये गये। सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं में सिक्किम में सीमा व्यापार को सुविधाजनक बनाना, दोनों देशों के बीच व्यापार को बढ़ाने के लिए वीजा प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करना, कानूनी मामलों पर

Received: 21-03-2026 | Accepted: 27-04-2026 | Published: 04-05-2026

International Journal of
LAW, ARTS AND HUMANITIES
Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal
ISSN: 3070-0523 www.zesterapublications.com Original Research Paper

एक समझौता (एमओयू) करना, बीजिंग विश्वविद्यालय में भारतीय अध्ययन केंद्र की स्थापना करना, सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों को लागू करना शामिल था। वैश्वीकृत अंतर्राष्ट्रीय राजनीति की कठोर वास्तविकताओं को ध्यान में रखते हुए, भारत और चीन दोनों के लिए उन क्षेत्रों में अपने रचनात्मक और सहकारी सहयोग को बढ़ाना फायदेमंद होगा जहां उनके हित सीधे तौर पर टकराव नहीं करते हैं।

भारत-चीन संबधों के कालक्रम को निम्न बिंदुओं द्वारा समझा जा सकता है:

- 1988 - 34 वर्षों के अंतराल में भारतीय पीएम श्री राजीव गांधी की चीन यात्रा। पंचशील के सिद्धांतो पर आधारित मैत्रीपूर्ण संबंधों की पुर्नस्थापना पर बल।
- वैज्ञानिक एवं तकनीकी सहयोग, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, नागरिक विमान चालक हेतु द्विपक्षीय समझौतों पर हस्ताक्षर।
- सीमा विवाद के समाधान हेतु संयुक्त कार्यकारी समूह के गठन पर सहमति।
- सितंबर 1993 - भारतीय पीएम पी.वी. नरसिम्हाराव और चीनी पीएम ली पेन्ग ने बीजिंग में मुलाकात कर सीमा-पार व्यापार, सीमा समझौता, पर्यावरण हेतु सहयोग रेडियो टेलीविजन प्रसारण पर तीन समझौता किये।
- जनवरी 1994 - बीजिंग घोषणा - चीन कश्मीर समस्या के समाधान के लिए समझौता वार्ता का समर्थन करता है तथा कश्मीर क्षेत्र में किसी भी प्रकार की स्वायत्तता का विरोध करता है।
- दिसंबर 1996 - चीन के राष्ट्रपति जियांग जेमिन की भारत यात्रा पर विवादित सीमा, सैन्य बल में कमी, शस्त्र नियंत्रण सहित विश्वास बहाली उपायों पर हस्ताक्षर किए।

Received: 21-03-2026 | Accepted: 27-04-2026 | Published: 04-05-2026

International Journal of
LAW, ARTS AND HUMANITIES
Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal
ISSN: 3070-0523 www.zesterapublications.com Original Research Paper

- वर्ष 2003 में भारत ने औपचारिक रूप से तिबब्त को चीन के भाग के रूप में मान्यता दे दी तथा वर्ष 2004 में चीन ने सिक्किम को भारत के औपचारिक भाग के रूप में मान्यता दी।

**भारत - अमेरिका के बीच सम्बन्ध: -**

भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका, दो सबसे अधिक आबादी वाले लोकतंत्र देश हैं। भारत-अमेरिका संबंधों की शुरुआत आशाजनक रही, लेकिन जल्द ही वे पहले पचास वर्षों के दौरान "अलगाव" की स्थिति में बदल गए। 1947 में शीत युद्ध के बढ़ने के साथ ही भारत को आज़ादी मिली। 1948-49 में संयुक्त राष्ट्र में जम्मू और कश्मीर संघर्ष पर पाकिस्तान की स्थिति का संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा समर्थन, साथ ही 1964 में पाकिस्तान को सैन्य सहायता प्रदान करने के उसके फैसले का दोनों देशों के बीच संबंधों पर स्थायी नकारात्मक प्रभाव पड़ा। 1960 और 1970 के दशक के दौरान, संयुक्त राज्य अमेरिका ने धीरे-धीरे खुद को भारत से दूर कर लिया, जबकि सोवियत संघ ने भारत को राजनीतिक, सैन्य और आर्थिक सहायता प्रदान की। बांग्लादेश की आजादी के आसपास पाकिस्तान के साथ संघर्ष के कारण 1971 में भारत-अमेरिका संबंध अपने सबसे निचले स्तर पर पहुंच गए। भारत का विरोध करने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन और पाकिस्तान के बीच एक गठबंधन बना। भारत के दो पड़ोसी देशों के साथ अमेरिका के रणनीतिक संबंधों के मजबूत होने से भारत की सुरक्षा चिंताएँ बढ़ गईं, जिसके कारण भारत ने खुद को सोवियत संघ के साथ और अधिक निकटता से जोड़ लिया। शीत युद्ध के समापन, सोवियत संघ के विघटन और 1990 के दशक की शुरुआत में भारत में आर्थिक उदारीकरण कार्यक्रम की शुरुआत ने साझेदारी में एक नई गतिशीलता का परिचय दिया। 1991 में, अमेरिकी सेना के कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल क्लाउड एम. किकलाइटर की भारत यात्रा के दौरान द्विपक्षीय संबंधों में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन आया। फिर भी, भारत के सीमित परमाणु निवारक के प्रयास

Received: 21-03-2026 | Accepted: 27-04-2026 | Published: 04-05-2026

International Journal of
LAW, ARTS AND HUMANITIES
Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal
ISSN: 3070-0523 www.zesterapublications.com Original Research Paper

के संबंध में दोनों पक्षों के बीच असहमति के कारण संबंध बाधित होते रहे। मई 1998 में परमाणु परीक्षण करने और सार्वजनिक रूप से हथियारीकरण के कार्यक्रम की घोषणा करने के भारत के निर्णय के परिणामस्वरूप दोनों देशों के बीच संबंध और खराब हो गए। संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन ने भारत के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय विरोध को संगठित करने और परमाणु कार्यक्रम को उलटने की वकालत करने के लिए सहयोग किया। संयुक्त राज्य अमेरिका ने अतिरिक्त रूप से भारत पर सैन्य, आर्थिक, वैज्ञानिक और तकनीकी प्रतिबंध लगाए।

मार्च 2000 में राष्ट्रपति बिल क्लिंटन की भारत यात्रा ने भारत-अमेरिका संबंधों में एक महत्वपूर्ण बदलाव को चिह्नित किया, जो शीत युद्ध की समाप्ति के बाद पहला बड़ा मोड़ था। बुश प्रशासन ने भारत के साथ अपनी बातचीत में महत्वपूर्ण बदलाव लाने के दृढ़ इरादे से सत्ता संभाली। 9/11 की त्रासदी ऐसे समय में आई जब भारत-अमेरिका संबंध तेजी से विकसित हो रहे थे। अमेरिकी दबाव के कारण पाकिस्तान को तालिबान को समर्थन देने की अपनी रणनीति छोड़नी पड़ी और खुद को आतंकवाद के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय गठबंधन के साथ जोड़ना पड़ा। अफगानिस्तान में संयुक्त राज्य अमेरिका के हस्तक्षेप के कारण अल-कायदा की आतंकवादी प्रशिक्षण सुविधाएं पूरी तरह से नष्ट हो गईं। अमेरिकी सरकार ने पाकिस्तान स्थित दो आतंकवादी संगठनों लश्कर-ए-तैयबा और जैश-ए-मोहम्मद को भारतीय संसद पर हमले के लिए जिम्मेदार ठहराया और उन्हें नामित आतंकवादी संगठनों की सूची में शामिल किया। 12 जनवरी 2002 को, संयुक्त राज्य अमेरिका के व्यापक कूटनीतिक प्रयासों के बाद, राष्ट्रपति मुशर्रफ ने पाकिस्तान में सुधार की वकालत करते हुए एक महत्वपूर्ण भाषण दिया। मुशर्रफ ने उग्रवाद की समाप्ति की वकालत की और घोषणा की कि पाकिस्तान के भीतर किसी भी इकाई को आतंकवादी कृत्यों में भाग लेने की अनुमति नहीं दी जाएगी। हालाँकि पाकिस्तान ने इन वादों को पूरा नहीं किया है, लेकिन उपरोक्त घटनाओं के आलोक में भारत-अमेरिका संबंधों के विश्लेषण से पता चलता है कि, पाकिस्तान के

Received: 21-03-2026 | Accepted: 27-04-2026 | Published: 04-05-2026

International Journal of
LAW, ARTS AND HUMANITIES
Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal
ISSN: 3070-0523 www.zesterapublications.com Original Research Paper

साथ अमेरिका के फिर से जुड़ने के बावजूद, 11 सितंबर के बाद की स्थिति ने भारत और अमेरिका के बीच घनिष्ठ संबंधों को बढ़ावा देने के लिए एक नया रणनीतिक आकर्षण प्रस्तुत किया है। संयुक्त राज्य अमेरिका ने स्पष्ट रूप से तालिबान के साथ संबंध तोड़ने के लिए पाकिस्तान को प्रभावित करने की अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया, साथ ही भारत की ओर निर्देशित सीमा पार आतंकवाद को खत्म करने की अपनी प्रतिबद्धताओं के प्रति पाकिस्तान की प्रतिबद्धता सुनिश्चित करने की क्षमता भी बनाए रखी। 2000 के बाद से, जब प्रधान मंत्री वाजपेयी ने कहा कि संयुक्त राज्य अमेरिका और भारत "अंतर्निहित सहयोगी" थे, दोनों पक्षों द्वारा सहयोग के विशिष्ट क्षेत्रों की पहचान करने के लिए व्यापक जांच की गई है जिसके परिणामस्वरूप साझा उद्देश्यों की प्राप्ति हो सकती है। भारत और अमेरिका को एशिया में उपस्थिति स्थापित करने के लिए अपने रक्षा और सुरक्षा सहयोग को बढ़ाने के अवसरों की तलाश करनी चाहिए।

**निष्कर्ष:** भारत के चीन और अमेरिका के साथ संबंध विविधता और परिवर्तन का गहरा संबंध रखते रहे हैं। चीन और अमेरिका के साथ द्विपक्षीय संबंधों की दिशा निर्धारित करने में, भारत ने अपनी विदेश नीति में सुधार किए और अपनी हितधारक रणनीतियों को पुनरावलोकन किया। चीन और अमेरिका दोनों के साथ भारत के संबंधों का आकार और स्वरूप उसके राष्ट्रीय महत्व और राजनीतिक उद्देश्यों के संबंध में अद्वितीय विचार और विकल्पों को प्रकट करता है। भारत ने चीन और अमेरिका के साथ द्विपक्षीय संबंधों को मजबूती से संभाला है और अपने राष्ट्रीय हितों की प्राथमिकता पर ध्यान केंद्रित किया है।

**संदर्भ सूची: -**


- कलहा. (2022). भारत - चीन सीमा मुद्दे, इंडिया: रेप्रो इंडिया लिमिटेड।
- शौरी. (2009). भारत - चीन सम्बन्ध, इंडिया: प्रभात प्रकाशन।
- देवी. (2009). भारत चीन सम्बन्ध एवं युद्ध 1962, इंडिया: ग्लोबल विज़न पब्लिशर्स।

International Journal of
LAW, ARTS AND HUMANITIES
Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal
ISSN: 3070-0523 www.zesterapublications.com Original Research Paper


- दीक्षित. (2021). भारतीय विदेश नीति, प्रभात प्रकाशन।
- यादव. (2013). भारत की विदेश निति, इंडिया: पार्सन एजुकेशन इंडिया।
- कुशरे, लखन. (2020). सामाजिक एवम आर्थिक समस्याऐ तथा आंतरिक सुरक्षा, शब्द-ब्रह्मा, 1, 1-7।